

दिल्ली राजपत्र Delhi Gazette

असाधारण

EXTRAORDINARY

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 3]

दिल्ली, बृहस्पतिवार, जून 4, 2015/ज्येष्ठ 14, 1937

[रा.रा.रा.क्षे.दि. सं. 33

No. 3]

DELHI, THURSDAY, JUNE 4, 2015/JYAISTHA 14, 1937

[N.C.T.D. No. 33

भाग—III

PART—III

राष्ट्रीय राजधानी राज्य क्षेत्र दिल्ली सरकार

GOVERNMENT OF THE NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI

इंदिरा गांधी दिल्ली महिला तकनीकी विश्वविद्यालय

अधिसूचनाएं

दिल्ली, 4 जून, 2015

सं. फा.16(16)/पीएलजी/आईजीडीटीयूडब्ल्यू/2013/1070.—इंदिरा गांधी दिल्ली महिला तकनीकी विश्वविद्यालय अधिनियम, 2012 (2012 की दिल्ली अधिनियम सं. 9) की धारा 31 के प्रावधानों के अनुसरण में विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल, एतद्वारा उत्कृष्ट विद्यार्थियों के लिए पदक, पारितोषिक और पुरस्कार स्थापित करने और समाज के आर्थिक रूप से दुर्बल वर्गों (ईडब्ल्यूएस) के विद्यार्थियों के लिए शुल्क को माफ करने से संबंधित निम्नलिखित अध्यादेश बनाते हैं, अर्थात्—

1. **संक्षिप्त नाम और प्रारंभ**—(1) इस अध्यादेश को इंदिरा गांधी दिल्ली महिला तकनीकी विश्वविद्यालय द्वितीय अध्यादेश, 2015 कहा जा सकेगा।

(2) यह दिनांक 20 दिसंबर, 2013 (प्रबंधन बोर्ड द्वारा इसके अनुमोदन की तारीख) से प्रवृत्त माना जाएगा।

2. विश्वविद्यालय उत्कृष्ट विद्यार्थियों के लिए विभिन्न पदक, पारितोषिक, पुरस्कार और प्रमाणपत्र स्थापित कर सकता है और विश्वविद्यालय के अध्ययन विभागों, विश्वविद्यालय द्वारा रखरखाव किए जाने वाले संस्थानों और संस्थाओं में विभिन्न कार्यक्रमों को पूरा कर रहे समाज के आर्थिक रूप से दुर्बल वर्गों (ईडब्ल्यूएस) के विद्यार्थियों के लिए, विद्यार्थी के अभिभावक की न्यूनतम आय के आधार पर, शुल्क को माफ कर सकता है। पुरस्कारों/पारितोषिकों का मूल्य, पात्रता शर्तें, चयन की पद्धतियां और प्रक्रिया तथा भुगतान की रीति, विश्वविद्यालय के अध्ययन विभागों, विश्वविद्यालय द्वारा रखरखाव किए जाने वाले संस्थानों और संस्थाओं के लिए पृथक् रूप से समय-समय पर बनाए गए विनियमों में निर्धारित किए गए अनुसार होंगी।

INDIRA GANDHI DELHI TECHNICAL UNIVERSITY FOR WOMEN

NOTIFICATIONS

Delhi, the 4th June, 2015

No. F. 16(16)/Plg./IGDTUW/2013/1070.—In pursuance of the provisions of Section 31 of the Indira Gandhi Delhi Technical University for Women Act, 2012 (Delhi Act No. 9 of 2012), the Board of Management of the University hereby makes the following Ordinance relating to institution of medals, prizes and awards to the outstanding students and fee waiver to students of Economically Weaker Sections (EWS) of the society, namely :-

1. **Short Title and Commencement.**—(1) This ordinance may be called the Second Ordinance of the Indira Gandhi Delhi Technical University for Women, 2015.

(2) It shall be deemed to have come into force with effect from the 20th December, 2013 (the date of its approval by the Board of Management).

2. The University may institute various medals, prizes, awards and certificates to the outstanding students and grant fee waiver to students of Economically Weaker Sections (EWS) of the society pursuing various programmes in the Departments of Studies of the University, Institutes and Institutions maintained by the University based on minimum income of the parents of the ward. The value of the awards/prizes, eligibility conditions, methods and procedure of selection and mode of payment shall be as laid down in the regulations formulated from time to time separately for Departments of Studies of the University, Institutes and Institutions maintained by the University.

एफ.16(16)/पीएलजी./आईजीडीटीयूडब्ल्यू/2013/1071—इंदिरा गांधी दिल्ली महिला तकनीकी विश्वविद्यालय अधिनियम, 2012 (2012 की दिल्ली अधिनियम सं. 9) की धारा 31 के प्रावधानों के अनुसरण में विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल, एतद्वारा इंदिरा गांधी दिल्ली महिला तकनीकी विश्वविद्यालय में सभी स्नातक/मास्टर डिग्रियां और स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रदान करने वाले कार्यक्रमों हेतु परीक्षाओं के संचालन और मूल्यांकन से संबंधित निम्नलिखित अध्यादेश बनाते हैं, अर्थात्—

1. **संक्षिप्त नाम और प्रारंभ—**

1.1 इस अध्यादेश को इंदिरा गांधी दिल्ली महिला तकनीकी विश्वविद्यालय तृतीय अध्यादेश, 2015 कहा जा सकेगा।

1.2 यह दिनांक 20 दिसंबर, 2013 (प्रबंधन बोर्ड द्वारा इसके अनुमोदन की तारीख) से प्रवृत्त माना जाएगा।

2. **सामान्य—** यह अध्यादेश सेमेस्टर प्रणाली का अनुसरण करते हुए स्नातक/मास्टर डिग्रियां और स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रदान करने वाले सभी कार्यक्रमों पर लागू होगा। किंतु, किसी कार्यक्रम में अतिरिक्त आवश्यकताएं हो सकती हैं जिन्हें उस कार्यक्रम के विनियमों में विनिर्दिष्ट किया जाएगा।

3. **परिभाषाएं—**

3.1 **शैक्षणिक कार्यक्रम/कार्यक्रम** से अध्ययन कार्यक्रम तथा/अथवा किसी डिग्री/डिप्लोमा को प्रदान करने वाला कोई अन्य संघटक अभिप्रेत होगा;

3.2 **एक शैक्षणिक वर्ष** शिक्षण की योजना में विनिर्दिष्ट आवश्यकताओं तथा संबंधित परीक्षाओं को पूरा करने के लिए निर्धारित लगभग बारह माह की अवधि है;

3.3 **अध्ययन बोर्ड (बीओएस)** से संबंधित विभाग का अध्ययन बोर्ड अभिप्रेत होगा;

3.4 **पाठ्यक्रम** से शैक्षणिक कार्यक्रम का एक संघटक अभिप्रेत होगा जो एक पृथक कोड सं. और उसे आबंटित विशिष्ट क्रेडिट रखता है;

3.5 **अंतावधि परीक्षा** से सेमेस्टर के अंत में आयोजित होने वाली परीक्षा अभिप्रेत होगी;

3.6 **बाह्य परीक्षक** से ऐसा परीक्षक अभिप्रेत होगा जो विश्वविद्यालय के नियोजन में नहीं है;

3.7 **मध्यावधि परीक्षा** से सेमेस्टर के दौरान आयोजित होने वाली परीक्षा अभिप्रेत होगी;

3.8 **पत्र निर्धारक** से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत होगा जिसे पत्र को निर्धारित करने का कार्य सौंपा गया है जो कि विश्वविद्यालय का शिक्षक हो सकता है अथवा ऐसा बाह्य शिक्षक हो सकता है जो विश्वविद्यालय के नियोजन में नहीं हो;

3.9 **सेमेस्टर प्रणाली** से ऐसा कार्यक्रम अभिप्रेत होगा जिसमें प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष को दो सेमेस्टर्स में विभाजित कर दिया जाता है;

- 3.10 विद्यार्थी से किसी शैक्षणिक कार्यक्रम के लिए विश्वविद्यालय के विभाग में प्रविष्ट ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत होगा जिसपर यह अध्यादेश लागू हो;
- 3.11 अनुचित साधन संवीक्षा समिति से अनुचित साधनों के प्रयोग के मामलों की जांच के लिए और ऐसे मामलों में दंड, यदि कोई हो, की सिफारिश करने के लिए समिति अभिप्रेत होगी;
- 3.12 विश्वविद्यालय से इंदिरा गांधी महिला तकनीकी विश्वविद्यालय अभिप्रेत होगा।

4. विश्वविद्यालय ऐसे सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिए परीक्षाएं आयोजित करेगा जो शैक्षणिक परिषद द्वारा अनुमोदित किए जाएं और जो शिक्षण की विहित योजनाओं के अनुसार और नियमित विद्यार्थियों हेतु अर्थात् ऐसे उम्मीदवारों हेतु जिन्होंने विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में अध्ययन पाठ्यक्रम को किया है और शैक्षणिक परिषद द्वारा यथा अनुमोदित पाठ्य-विवरणों के अनुसार स्नातक/मास्टर डिग्री, स्नातकोत्तर डिप्लोमा, यथास्थिति, प्रदान करने के लिए इसके द्वारा समय-समय पर अधिसूचित किए जाएं।

5. विश्वविद्यालय की परीक्षाएं शिक्षण योजना और परीक्षा तथा पाठ्य-विवरण में, उस अध्ययन कार्यक्रम के लिए विनिर्दिष्ट अवधि हेतु खुली होगी:

परंतु शैक्षणिक परिषद ऐसी दशाओं को पूरा किए जाने के अधीन, जो समय-समय पर शैक्षणिक परिषद द्वारा निर्धारित की जाए, किसी विनिर्दिष्ट शैक्षणिक कार्यक्रम हेतु विश्वविद्यालयी परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवारों की किसी भी अन्य श्रेणी को अनुमति दे सकता है:

परंतु यह भी कि किसी विद्यार्थी को इस अध्यादेश के खंड 8 में यथा उपबधित अथवा विश्वविद्यालय के किसी अन्य अध्यादेश में यथा उपबधित अंतावधि परीक्षा में बैठने से विवर्जित किया जा सकता है।

6. कार्यक्रम, विषय-वस्तु और अवधि—

- 6.1 एक स्नातक/मास्टर डिग्री और स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में संबंधित कार्यक्रम की शिक्षण योजना और परीक्षा तथा पाठ्य-विवरण में यथा विनिर्दिष्ट ऐसे अनेक पाठ्यक्रम तथा/अथवा अन्य संघटक शामिल होंगे, जैसाकि शैक्षणिक परिषद द्वारा अनुमोदित किए जाएं।
- 6.2 किसी कार्यक्रम के पूरा होने के लिए अपेक्षित न्यूनतम अवधि में संबंधित कार्यक्रम के शिक्षण योजना और परीक्षा तथा पाठ्य-विवरण में यथा विनिर्दिष्ट कार्यक्रम अवधि होगी।
- 6.3 किसी कार्यक्रम को, जिसके लिए विहित कार्यक्रम अवधि n सेमेस्टर है, पूरा करने के लिए अधिकतम अनुमेय अवधि $(n + 4)$ सेमेस्टर होगी। कार्यक्रम की सभी अपेक्षाओं को $(n + 4)$ सेमेस्टरों में पूरा कर लिया जाना होगा।
- 6.4 पूर्वस्नातक कार्यक्रम में बने रहने के लिए विद्यार्थी को खंड 11.6 में यथा परिभाषित संतोषजनक शैक्षणिक निष्पादन दर्शाना होगा। यदि शैक्षणिक निष्पादन में कमी रह जाती है, तो विद्यार्थी को वर्ष को पुनः पूरा करने के लिए कहा जा सकता है अथवा उसके कार्यक्रम को समाप्त किया जा सकता है।

6.5 ऑडिट पाठ्यक्रम —

- (i) किसी विद्यार्थी को शिक्षण योजना और परीक्षा तथा पाठ्य-विवरण में शामिल नहीं किए गए किसी पाठ्यक्रम(मों) को, अथवा शिक्षण योजना और परीक्षा तथा पाठ्य-विवरण में शामिल किसी पाठ्यक्रम(मों) को, जिसे विद्यार्थी एक क्रेडिट पाठ्यक्रम के रूप में नहीं चुन रहा हो, अथवा जैसा कि खंड 13.1 में विहित हो, 'ऑडिट' करने की अनुमति दी जा सकती है।
- (ii) विश्वविद्यालय विद्यार्थी को एक या अधिक पाठ्यक्रम का ऑडिट करने के लिए कह सकता है ताकि पूर्व-अपेक्षित कमी को पूरा किया जा सके।
- (iii) ऐसे ऑडिट किए हुए पाठ्यक्रम(मों) को, इस शर्त के अधीन कि पाठ्यक्रम की उपस्थिति अपेक्षा पूरी कर लिए जाने को संबंधित शिक्षक(को) द्वारा विधिवत् प्रमाणित किया जाए, "ऑडिट किए हुए पाठ्यक्रम(मों)" के एक पृथक शीर्ष के अंतर्गत अंतिम अंक-पत्र में दर्शाया जाएगा। किंतु, कोई विद्यार्थी न तो ऐसे पाठ्यक्रम(मों) के लिए किसी क्रेडिट हेतु हकदार होगा और न ही इन पर परिणामों की घोषणा के प्रयोजनार्थ विचार किया जाएगा।

7. सेमेस्टर—

- 7.1 एक शैक्षणिक वर्ष को दो सेमेस्टरों में विभाजित किया जाएगा। प्रत्येक सेमेस्टर में परीक्षा अवधि सहित बाइस सप्ताह की अवधि शामिल होगी। प्रथम सेमेस्टर के बाद दो सप्ताह का अवकाश होगा और द्वितीय सेमेस्टर के बाद छह सप्ताह का अवकाश होगा।
- 7.2 विश्वविद्यालय द्वारा शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ से पहले, प्रत्येक वर्ष शैक्षणिक वर्ष अधिसूचित किया जाएगा।
- 7.3 शिक्षण कार्य को समर्पित सेमेस्टरों का शैक्षणिक विवरण निम्नलिखित होगा:
- | | | |
|--|---|--------------|
| शिक्षा प्रदान करना तथा/अथवा प्रयोगशाला कार्य
(कक्षागत परीक्षाओं समेत) | — | अठारह सप्ताह |
| तैयारी हेतु अवकाश | — | एक सप्ताह |
| सेमेस्टर—समाप्ति परीक्षा, व्यावहारिक/प्रयोगशाला परीक्षा सहित | — | तीन सप्ताह |

8. उपस्थिति—

- 8.1 एक विद्यार्थी को एक सेमेस्टर में सभी पाठ्यक्रमों को मिलाकर न्यूनतम कुल पचहत्तर प्रतिशत की उपस्थिति दर्ज करानी होगी:

परंतु संकाय का डीन/डीन (शैक्षणिक मामले)/विभागाध्यक्ष लिखित में दर्ज किए गए कारणों से किसी विद्यार्थी को उपस्थिति में 10% तक की कमी को माफ कर सकेगा:

परंतु यह भी कि आपवादिक परिस्थितियों में, कुलपति न्यूनतम उपस्थिति में पांच प्रतिशत तक की और छूट दे सकेगा;

परंतु यह भी कि किसी भी परिस्थिति में, किसी विद्यार्थी को, जो किसी सेमेस्टर में साठ प्रतिशत से कम की कुल उपस्थिति रखता है, अंतावधि परीक्षाओं में उपस्थित नहीं होने दिया जाएगा।

- 8.2 खंड 8.1 में दी गई छूट पर संकाय का डीन/डीन (शैक्षणिक मामले)/विभागाध्यक्ष यह दर्शाने वाले दस्तावेजों को प्रस्तुत किए जाने पर विचार कर सकता है कि विद्यार्थी:

(i) प्राधिकृत कार्यक्रमों में व्यस्त था;

(ii) किसी बीमारी/अस्वस्थता से पीड़ित था।

टिप्पणी:—(क) विद्यार्थी को अध्ययन पर वापस आने के सात दिनों के भीतर उपर्युक्त आशय के दस्तावेज जमा करा देने चाहिए। इस अवधि के बाद जमा कराए गए दस्तावेजों पर विचार नहीं किया जाएगा।

(ख) किसी भी दशा में, खंड 8.1 से परे उपस्थिति में किसी भी छूट की अनुमति नहीं होगी।

- 8.3 जिस विद्यार्थी को उपस्थिति की कमी के कारण रोका गया है, उसे अगले सेमेस्टर में भेजे जाने की अनुमति नहीं होगी और उसे विद्यार्थियों के अगले बैच के साथ पुनः दाखिला लेने और सभी पाठ्यक्रमों को पुनः पूरा करने की आवश्यकता होगी।
- 8.4 किंतु ऐसे विद्यार्थी की विश्वविद्यालय नामांकन संख्या अपरिवर्तित रहेगी और उसके द्वारा, जैसाकि खंड 6.3 में उल्लिखित है, $(n+4)$ सेमेस्टरों की अधिकतम अनुमेय अवधि में कार्यक्रम को पूरा किया जाना अपेक्षित होगा।
- 8.5 विभागाध्यक्ष अंतावधि परीक्षा के प्रारंभ से कम से कम पांच कैलेंडर दिवस पहले ऐसे सभी विद्यार्थियों के नामों की घोषणा करेगा जो अंतावधि परीक्षा में बैठने के लिए पात्र नहीं हैं और साथ-साथ इसकी सूचना परीक्षा नियंत्रक को देगा।
- 8.6 यदि कोई ऐसा विद्यार्थी त्रुटिवश परीक्षा में बैठ जाता है, जिसे विभाग द्वारा वास्तव में रोका गया है, तो उसके परिणाम को शून्य और बातिल माना जाएगा।

9. मूल्यांकन—

- 9.1 पाठ्य-विवरणों और शिक्षण योजना तथा परीक्षा में पाठ्यक्रम का समग्र अंक पाठ्यक्रम को आबंटित क्रेडिटों के अनुसार निर्धारित किए जाएंगे।

9.2 किसी पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिए दो संघटक होंगे जबतक कि शिक्षण योजना और परीक्षा तथा पाठ्य-विवरण में विशिष्ट रूप से अन्यथा उल्लेख नहीं किया जाए:

(i) अंतावधि परीक्षा के माध्यम से मूल्यांकन;

(ii) पाठ्यक्रम के शिक्षक(कों) द्वारा सतत मूल्यांकन।

9.3 मूल्यांकन के विभिन्न संघटकों के लिए अंकों का वितरण निम्नलिखित रूप में होगा:

सिद्धांत पाठ्यक्रम	अंतावधि परीक्षा हेतु अंक	शिक्षक द्वारा सतत मूल्यांकन हेतु अंक
सिद्धांत पाठ्यक्रम	60%	40%
व्यावहारिक/प्रयोगशाला पाठ्यक्रम	60%	40%
शोध निबंध/थीसिस		
बाह्य परीक्षक	60%	
आंतरिक परीक्षक		40%

9.4 उपर्युक्त के अंतर्गत शामिल नहीं किए गए किसी भी अन्य संघटक के लिए, कुल अंक को कुलपति के अनुमोदन से अध्ययन बोर्ड द्वारा निर्धारित किया जाएगा।

9.5 शिक्षक द्वारा सतत मूल्यांकन

(i) पाठ्यक्रम संघटकों और अंकों का वितरण:

पाठ्यक्रम संघटक	वितरित अंक
सिद्धांत पाठ्यक्रम: शिक्षक द्वारा सतत मूल्यांकन निम्नलिखित पर आधारित होगा:	
• दो कक्षागत परीक्षाएं*	प्रत्येक परीक्षा के लिए 15 अंक
• सुपुर्द कार्य / समूह चर्चा / मौखिक परीक्षा / अतिरिक्त परीक्षा / प्रश्नोत्तरी / उपस्थिति इत्यादि	10 अंक
* ये दो कक्षागत परीक्षाएं विश्वविद्यालय के शैक्षणिक कैलेंडर के अनुसार सामान्यतया शिक्षण के छह सप्ताह और बारह सप्ताह के बाद आयोजित की जाएगी।	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला पाठ्यक्रम	
शिक्षक द्वारा सतत मूल्यांकन प्रयोगशाला, उपस्थिति, व्यावहारिक अभ्यास/सुपुर्द कार्यों, प्रश्नोत्तरियों, इत्यादि में निष्पादन आधारित होगा।	15, 15 और 10 अंक

(ii) जहां कहीं भी पाठ्य-विवरण में विनिर्दिष्ट हो, शोध निबंध/थीसिस हेतु मूल्यांकन और अंकों को प्रदान किए जाने का कार्य एक समिति द्वारा किया जाएगा जिसमें एक आंतरिक परीक्षक, जो सामान्यतया पर्यवेक्षक होगा, और एक या अधिक बाह्य परीक्षक शामिल होंगे। आंतरिक परीक्षक कुल 40% अंकों में से अंक प्रदान करेगा, और बाह्य परीक्षक कुल 60% अंकों में से अंक प्रदान करेंगे। अध्यादेश के खंड 10 में यथा विनिर्दिष्ट सुझाए गए तीन या अधिक नामों के पैनल में से कुलपति द्वारा परीक्षक नियुक्त किए जाएंगे;

(iii) विश्वविद्यालय को शिक्षक द्वारा किए गए सतत मूल्यांकन के सभी रिकार्डों को मांगने का अधिकार होगा और यदि यह किसी विशिष्ट मामले(मामलों) में उचित समझे, तो शिक्षक के मूल्यांकन में रियायत करने का अधिकार होगा;

(iv) प्रत्येक अंतावधि परीक्षा प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए एक परीक्षक बोर्ड द्वारा आयोजित की जाएगी। बोर्ड में एक या अधिक परीक्षक शामिल होंगे;

2482 D9115-2

(v) खंड 9.5 (i) और 9.5 (ii) के अंतर्गत नहीं आने वाली अन्य किसी भी प्रकार की परीक्षा के लिए परीक्षा के आयोजन की रीति परीक्षा के पाठ्य विवरण/योजना में विशिष्ट रूप से उपबंधित रूप में होगी और ऐसे उपबंध की अनुपस्थिति होने पर, यह कुलपति के अनुमोदन से अध्ययन बोर्ड की सिफारिश पर परीक्षा नियंत्रक द्वारा निर्धारित की जाएगी।

(vi) किसी सेमेस्टर के परिणाम (अंतावधि परीक्षाओं और शिक्षक के सतत मूल्यांकन दोनों समेत) परीक्षा नियंत्रक द्वारा घोषित किए जाएंगे। किंतु, विस्तृत परिणाम की संवीक्षा के बाद, यदि परीक्षा नियंत्रक को पता चलता है कि समग्र रूप से या किसी पाठ्यक्रम विशेष में परीक्षा के स्तर में कोई स्पष्ट परिवर्तन आया है, तो वह उस मामले को कुलपति द्वारा इस प्रयोजनार्थ विशेष रूप से गठित रियायत समिति को भेज सकता है।

(vii) विभिन्न पाठ्यक्रमों में किसी विद्यार्थी द्वारा प्राप्त अंकों को रखने वाली अवार्ड सूची परिणाम की घोषणा के बाद, प्रत्येक सेमेस्टर के अंत में, परीक्षा नियंत्रक द्वारा जारी की जाएगी।

10. सेमेस्टर अंतावधि परीक्षाओं का आयोजन—

10.1 सभी अंतावधि परीक्षाओं को परीक्षा नियंत्रक द्वारा आयोजित किया जाएगा।

10.2 परीक्षाओं की समय-सूची अंतावधि परीक्षाओं के प्रारंभ के प्रथम दिन से कम से कम दस दिन पहले परीक्षा नियंत्रक द्वारा अधिसूचित की जाएगी।

10.3 सिद्धांत तथा व्यावहारिक परीक्षाओं और शोध निबंध/थीसिस/परियोजना रिपोर्ट/प्रशिक्षण रिपोर्ट के लिए सभी परीक्षक कुलपति के अनुमोदन से परीक्षा नियंत्रक द्वारा नियुक्त किए जाएंगे:

परंतु कुलपति अपने विवेकानुसार परीक्षकों के अनुमोदन हेतु प्राधिकार को प्रत्यायोजित कर सकेगा।

10.4 परीक्षकों के नामों हेतु सिफारिशें संबंधित अध्ययन बोर्डों से उनके संबंधित अध्यक्ष के माध्यम से प्राप्त की जाएंगी। जहां कहीं आकस्मिक आवश्यकता होगी और अध्ययन बोर्ड की बैठक नहीं हो सकती होगी, अध्ययन बोर्ड का अध्यक्ष यह स्पष्ट रूप से बताते हुए कि अध्ययन बोर्ड की बैठक क्यों नहीं आयोजित की जा सकती, नामों की सिफारिश कर सकता है। आपात स्थितियों में, जहां, किसी कारणवश उपर्युक्त उल्लेखानुसार अध्ययन बोर्ड से सिफारिशें प्राप्त नहीं की जा सकती हैं, सिफारिशें कुलपति द्वारा नामनिर्देशित किसी एक डीन से प्राप्त की जा सकती हैं।

10.5 परीक्षा नियंत्रक कुलपति को अनुमोदन हेतु सूची प्रस्तुत करने से पहले अध्ययन बोर्ड/विभागाध्यक्ष से उसे प्राप्त परीक्षकों के पैनल में एक या अधिक नामों को जोड़ने के लिए प्राधिकृत होगा।

10.6 पत्र निर्धारक से प्रश्न पत्र(त्रों) के प्राप्त होने के बाद, इसे कुलपति के अनुमोदन से परीक्षा नियंत्रक द्वारा विषय-वार नियुक्त किए जाने वाले मॉडरेटर(रों) द्वारा सरल बनाया जाएगा। परीक्षा नियंत्रक सुनिश्चित करेगा कि प्रश्न पत्र बैंक में, प्रत्येक विषय में विधिवत सरल बनाया गया न्यूनतम दो प्रश्न पत्र उपलब्ध हों।

10.7 प्रश्न पत्र को निर्धारित करने के लिए अनुमोदित पैनल में से परीक्षा नियंत्रक द्वारा नियुक्त परीक्षक, पिछले वर्ष के प्रश्न पत्रों का, जहां कहीं लागू हो, निर्देशिका के रूप में उपयोग करते हुए प्रश्न पत्र निर्धारित करेगा। प्रश्न पत्र पाठ्यक्रम के पूरे पाठ्य-विवरण में से निर्धारित किया जाएगा।

11. पाठ्यक्रमों को उत्तीर्ण करने, अंकों और श्रेणी के लिए मानदंड—

11.1 पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने और इसे आबंटित क्रेडिटों को अर्जित करने के लिए अंतावधि परीक्षा और शिक्षक के सतत मूल्यांकन समेत प्रत्येक पाठ्यक्रम में कुल अंकों में न्यूनतम 50% अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा। ऐसा विद्यार्थी जो किसी पाठ्यक्रम में 50% से कम अंक प्राप्त करता है, उस पाठ्यक्रम में अनुत्तीर्ण माना जाएगा।

11.2 कोई विद्यार्थी परिणाम की घोषणा के तारीख से दो सप्ताह के भीतर विहित शुल्कों का भुगतान कर किसी विशिष्ट पाठ्यक्रम(मों) की परीक्षा उत्तर-पुस्तिका की पुनः जांच के लिए आवेदन कर सकता है। पुनः जांच से यह सत्यापित करना अभिप्रेत होगा कि क्या प्रश्न पत्र के अनुसार सभी प्रश्नों और उनके भागों को विधिवत् अंक दिए गए हैं और अंकों का कुल योग किया है। विसंगति पाए जाने की स्थिति में, इसे संबंधित अंतावधि परीक्षा के परिणाम तथा अंक-पत्र दोनों में उपर्युक्त परिवर्तनों के माध्यम से ठीक कर दिया जाएगा।

11.3 किसी पाठ्यक्रम को आबंटित अधिकतम अंकों के 50% से कम अंक (अंतावधि परीक्षा और शिक्षक के सतत मूल्यांकन समेत) प्राप्त करने वाले और पाठ्यक्रम में अनुत्तीर्ण विद्यार्थी को बाद के सत्र(त्रों) में, जब पाठ्यक्रम प्रदान किया जाएगा, पाठ्यक्रम की अंतावधि परीक्षा में पुनः बैठने की अनुमति दी जाएगी जो खंड 6.3 में यथा उल्लिखित $(n+4)$ सेमेस्टर्स की अधिकतम अनुमेय अवधि के अधधीन होगी। परीक्षा में पुनः बैठने वाले ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने शिक्षक के सतत मूल्यांकन में 50% से कम अंक प्राप्त किए हों, विद्यार्थियों के अगले बैच के साथ दोनों कक्षागत परीक्षाओं को दोबारा देने और उनके निष्पादन को सुधारने का विकल्प रखेंगे। ऐसे मामलों में, विद्यार्थी उक्त सेमेस्टर के प्रारंभ में ऐसे सुधार के लिए विभागाध्यक्ष से अनुरोध करेगा और सुधारे गए आंतरिक अंकों पर, यदि वे अंतावधि परीक्षा के प्रारंभ से कम से कम सात दिन पहले संबंधित विभाग से प्राप्त होते हैं, विचार किया जाएगा, अन्यथा विद्यार्थी द्वारा पहले से प्राप्त पूर्व के आंतरिक अंकों को बिना किसी परिवर्तन के गणना में ले लिया जाएगा। ऐसे मामलों में, जिनमें विद्यार्थी विद्यार्थियों के अगले बैच के साथ दोनों कक्षागत परीक्षा निष्पादन को सुधारने का विकल्प चुनता है, दोनों कक्षागत परीक्षाओं में प्राप्त

अंकों को सुपुर्द कार्यों/समूह चर्चा/मौखिक परीक्षा/अतिरिक्त परीक्षा/ प्रश्नोत्तरी इत्यादि के संघटक को शामिल करने के लिए आनुपातिक रूप से बढ़ा दिया जाएगा।

इस संबंध में विद्यार्थियों से कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाएगा।

- 11.4 ऐसे विद्यार्थी की, जिसे खंड 11.3 के अनुसार अंतावधि परीक्षा में पुनः बैठना है, उस पाठ्य विवरण के अनुसार परीक्षा ली जाएगी जो बाद के सेमेस्टर(रों) के दौरान लागू होगा। यदि, विषय के पाठ्यक्रम की सामग्री या पाठ्य-विवरण संशोधित किया जाता है, तो विषय/विषयों विशेष में अनुत्तीर्ण विद्यार्थी को संशोधित पाठ्यक्रम सामग्री के अनुसार उक्त पाठ्यक्रम/पाठ्यक्रमों की परीक्षा में बैठना होगा। यदि कोई विषय विशेष को समाप्त कर दिया जाता है, तो विभाग समाप्त किए गए विषय के एवज में किसी अन्य समकक्ष विषय को विनिर्दिष्ट कर सकता है। ऐसे मामले में, अनुत्तीर्ण विद्यार्थी को मध्यावधि और अंतावधि दोनों परीक्षाओं में बैठना अपेक्षित होगा।

- 11.5 जो विद्यार्थी परीक्षा में पुनः बैठने के लिए पात्र हैं, उन्हें परीक्षा में पुनः बैठने की अनुमति प्राप्त करने के लिए विभाग के माध्यम से परीक्षा नियंत्रक के पास आवेदन करना होगा और विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित शुल्क का भुगतान करना होगा।

11.6 अगले वर्ष में उन्नति के लिए मानदंड—

- (i) कोई विद्यार्थी अगले शैक्षणिक वर्ष में केवल तभी उन्नति पाएगा जब ऐसे विद्यार्थी ने कम से कम निम्नलिखित प्राप्त किया हो—

(क) उस शैक्षणिक वर्ष के, जिससे अगले शैक्षणिक वर्ष में उन्नति चाही जा रही है, कुल क्रेडिटों का 50% (दो दशमलव अंकों तक परिशुद्ध), और

(ख) उस शैक्षणिक वर्ष के, जिससे अगले शैक्षणिक वर्ष में उन्नति चाही जा रही है, क्रेडिटों को छोड़कर पूर्व वर्ष के कुल क्रेडिटों का 90% (दो दशमलव अंकों तक परिशुद्ध और उसके बाद पूर्णांकों में परिवर्तित)।

- (ii) ऐसे सभी विद्यार्थी जो यहां ऊपर उल्लिखित रूप में अपेक्षित क्रेडिटों में कमी के कारण अगले शैक्षणिक वर्ष में उन्नति पाने में विफल रहते हैं, उन्हें स्वतः उन पूर्व सेमेस्टर्स की, जिनमें विद्यार्थी अनुत्तीर्ण रहा है, ऐसी परीक्षाओं में पुनः बैठने के लिए शैक्षणिक अवकाश लिया हुआ घोषित किया जाएगा ताकि वह अगले शैक्षणिक वर्ष में उन्नति पाने के लिए पर्याप्त क्रेडिट प्राप्त कर सकें। शैक्षणिक अवकाश केवल उन्हीं विद्यार्थियों पर लागू होगा—

(क) जो विश्वविद्यालय के मानदंडों के अनुसार कार्यक्रम के किसी वर्ष विशेष में कक्षा में कोई उपस्थिति नहीं देते हैं,

(ख) जिन्हें उपस्थिति में कमी के कारण रोका जाता है,

(ग) जो किसी वर्ष विशेष/सेमेस्टर (रों) में 50% क्रेडिट प्राप्त करने में सक्षम नहीं रहते हैं।

- (iii) शैक्षणिक कार्यक्रम/पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए विद्यार्थी हेतु केवल दो शैक्षणिक अवकाशों की अनुमति है। किसी भी स्थिति में, किसी विद्यार्थी को, चाहे किसी भी कारण से, जिसमें पाठ्यक्रम/कार्यक्रम को पूरा करने की कुल अवधि के दौरान उपस्थिति की कमी या क्रेडिटों में कमी के कारण रोका जाना शामिल है, दो से अधिक शैक्षणिक अवकाशों को लेने की अनुमति नहीं होगी। ऐसा विद्यार्थी जिसने दो शैक्षणिक अवकाशों का उपयोग कर लिया है और उसे उन्नति नहीं मिलने या रोके जाने के कारण शैक्षणिक अवकाश लेने का और अवसर उपलब्ध हो जाता है, तो ऐसे मामलों में ऐसे विद्यार्थी का दाखिला सीधे उसी समय, जब दो से अधिक शैक्षणिक अवकाश लेने का ऐसा अवसर उपलब्ध होता है, स्वतः निरस्त हो जाएगा।

- 11.7 ऐसा विद्यार्थी जिसने संबंधित शिक्षण योजना और परीक्षा तथा पाठ्य-विवरण में विहित क्रेडिटों की न्यूनतम संख्या अर्जित कर ली है, कार्यक्रम में उत्तीर्ण घोषित किया जाएगा, और वह संगत डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पात्र होगा। किसी कार्यक्रम की शिक्षण योजना और परीक्षा तथा पाठ्य-विवरण में शामिल क्रेडिट, संबंधित सांविधिक या विनियामक प्राधिकरण, यदि कोई हो, के विहित दिशानिर्देशों के अध्वधीन, ऐसे न्यूनतम विनिर्दिष्ट क्रेडिटों से सामान्यतया 5-10% अधिक होंगे।

11.8 श्रेणी प्रदान किया जाना— सफल उम्मीदवारों को निम्नलिखित रूप में श्रेणियों में रखा जाएगा—

- (i) **द्वितीय श्रेणी:** कार्यक्रम के अंत में 50 और उससे ऊपर किंतु 60 से नीचे का संचयी निष्पादन सूचकांक (सीपीआई) प्राप्त करने वाली उम्मीदवार को द्वितीय श्रेणी में रखा जाएगा;
- (ii) **प्रथम श्रेणी:** कार्यक्रम के अंत में 60 और उससे ऊपर किंतु 75 से नीचे का संचयी निष्पादन सूचकांक (सीपीआई) प्राप्त करने वाली उम्मीदवार को प्रथम श्रेणी में रखा जाएगा;
- (iii) **श्रेष्ठांकों के साथ प्रथम श्रेणी:** कार्यक्रम के अंत में 75 और उससे ऊपर का संचयी निष्पादन सूचकांक (सीपीआई) प्राप्त करने वाली उम्मीदवार श्रेष्ठांकों के साथ प्रथम श्रेणी में रखी जाएगी, बशर्ते उम्मीदवार उन सभी पाठ्यक्रमों में उत्तीर्ण हुई हो जिसके लिए उसने क्रेडिट अर्जित किए हैं। इसके अलावा, 90 और उससे ऊपर के संचयी निष्पादन सूचकांक को प्राप्त करने वाली उम्मीदवार को अनुपम निष्पादन के साथ कार्यक्रम में उत्तीर्ण माना

जाएगा बशर्ते वह प्रथम प्रयास में ही उन सभी पाठ्यक्रमों में उत्तीर्ण हुई हो जिसके लिए उसने क्रेडिट अर्जित किए हैं। ऐसे उम्मीदवार को इस आशय का एक विशेष विश्वविद्यालय प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा;

(iv) उपर्युक्त के लिए संचयी निष्पादन सूचकांक (सीपीआई) का परिकलन खंड 13.1 में दिए गए अनुसार किया जाएगा और यह केवल उन पाठ्यक्रमों में प्राप्त अंकों पर आधारित होगा जिनके लिए क्रेडिट अर्जित किए गए हैं।

12. डिग्री/डिप्लोमा प्रदान किया जाना—

12.1 किसी विद्यार्थी को कोई डिग्री/डिप्लोमा तभी प्रदान किया जाएगा यदि:

वह विद्यार्थी शैक्षणिक परिषद द्वारा विहित सभी शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक अपेक्षाओं और अध्यादेश में यथा विनिर्दिष्ट अपेक्षाओं को पूरा करने के बाद डिग्री/डिप्लोमा प्रदान किए जाने के लिए पात्र होती है:

बशर्ते (क) उस विद्यार्थी ने संबंधित कार्यक्रम की शिक्षण योजना और परीक्षा तथा पाठ्य-विवरण में यथा विनिर्दिष्ट न्यूनतम क्रेडिट सफलतापूर्वक अर्जित किया हो (ख) किसी विभाग/विश्वविद्यालय में विद्यार्थी के नाम पर कोई बकाया देय नहीं हो और (ग) विद्यार्थी के विरुद्ध कोई अनुशासनिक कार्रवाई लंबित नहीं हो।

12.2 पाठ्यक्रमों को उत्तीर्ण करने और क्रेडिटों को प्रदान किए जाने हेतु मानदंड — पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने और इसे आबंटित क्रेडिटों को अर्जित करने के लिए अंतावधि परीक्षा और शिक्षक के सतत मूल्यांकन समेत प्रत्येक पाठ्यक्रम में कुल अंकों में न्यूनतम 50% अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा। ऐसे विद्यार्थी जो किसी पाठ्यक्रम में 50% से कम अंक प्राप्त करते हैं, उसे उस पाठ्यक्रम में अनुत्तीर्ण माना जाएगा और उस विद्यार्थी को उस पाठ्यक्रम के लिए कोई क्रेडिट प्रदान नहीं किया जाएगा।

12.3 आपवादिक परिस्थितियों में, जहां उत्तीर्णता की अपेक्षाओं का गंभीर उल्लंघन अथवा अनुचित साधनों के उपयोग का बाद के चरण में पता चलता है, शैक्षणिक परिषद पहले प्रदान की जा चुकी डिग्री को वापस लेने के लिए प्रबंधन बोर्ड से सिफारिश कर सकती है।

13. संचयी निष्पादन सूचकांक (सीपीआई) का परिकलन—

13.1 डिग्री/डिप्लोमा के लिए यथा अपेक्षित न्यूनतम क्रेडिट अर्जित कर लेने के बाद विद्यार्थी डिग्री/डिप्लोमा प्रदान किए जाने के लिए पात्र होगी बशर्ते उसने मुख्य विषयों में चार से अधिक क्रेडिट को छोड़ नहीं दिया हो अथवा उनमें अनर्ह नहीं हुई हो। किसी उम्मीदवार के समग्र निष्पादन को किसी भी चरण पर निम्नलिखित रूप में निर्धारित किया जाएगा:

$$\text{संचयी निष्पादन सूचकांक} = \frac{\sum N C_n M_n}{\sum N C_n}$$

जहां C_n किसी सेमेस्टर में n पाठ्यक्रम के लिए अर्जित क्रेडिटों की संख्या है और M_n पाठ्यक्रम n के लिए विद्यार्थी द्वारा अर्जित अंक है। N पाठ्यक्रमों की कुल संख्या है जिनपर निष्पादन का मापन किया जा रहा है। सभी पाठ्यक्रम 100 का अधिकतम अंक रखेंगे, चाहे पाठ्यक्रमों को आबंटित क्रेडिटों की संख्या कुछ भी हो। संचयी निष्पादन सूचकांक का परिकलन करने में केवल उन्हीं पाठ्यक्रमों पर विचार किया जाएगा जिन्हें विद्यार्थी ने 50% से अन्यून अंक प्राप्त करते हुए उत्तीर्ण किया है और जिनके लिए क्रेडिट अर्जित किए गए हैं, अन्य पाठ्यक्रम जिनमें विद्यार्थी उपस्थित हुआ है, किंतु उसने 50% से कम अंक प्राप्त किया है, "ऑडिट पाठ्यक्रम माने जाएंगे" और इसे तदनुसार अंतिम अंक पत्र में दर्शाया जाएगा।

13.2 उम्मीदवार का संचयी निष्पादन सूचकांक उन विषयों में, जिनमें उसने उच्चतम अंक प्राप्त किए हैं, उसके निष्पादन पर विचार करते हुए प्रत्येक कार्यक्रम के लिए अपेक्षित न्यूनतम क्रेडिटों के आधार पर परिकलित किया जाएगा। किंतु, अंक पत्र में, उम्मीदवार द्वारा अर्जित अधिकतम क्रेडिटों को भी दर्शाया जाएगा।

13.3 समतुल्यता के प्रयोजनार्थ विद्यार्थी के संचयी निष्पादन सूचकांक को अंकों की प्रतिशतता के समतुल्य समझा जाएगा।

14. अनुचित साधनों का उपयोग— परीक्षा में अनुचित साधनों के कथित उपयोग से संबंधित सभी मामलों को, एक-एक मामले में निर्णय के लिए और शास्तियों की सिफारिश, यदि कोई हो, करने के लिए स्थायी अनुचित साधन संवीक्षा समिति/समितियों के समक्ष रखा जाएगा। "अनुचित साधनों का उपयोग" माने जाने वाले कृत्यों तथा अनुचित साधनों के संदिग्ध/कथित/सूचित उपयोग के मामलों से निपटने की प्रक्रिया को शैक्षणिक परिषद द्वारा अनुमोदित पृथक विनियमों में विनिर्दिष्ट किया जाएगा।

15. विद्यार्थी शिकायत समिति— प्रश्न पत्रों के निर्धारण इत्यादि के संबंध में परीक्षा की समाप्ति के बाद सात दिनों के भीतर विभागाध्यक्ष की विशिष्ट सिफारिशों के साथ विद्यार्थियों से किसी लिखित अभ्यावेदन शिकायतों के प्राप्त होने की दशा में, उस पर कुलपति द्वारा गठित की जाने वाली विद्यार्थी शिकायत समिति द्वारा विचार किया जाएगा। कुलपति उक्त परीक्षा के परिणाम(मों) की घोषणा से पहले, विद्यार्थी शिकायत समिति की सिफारिशों पर उपयुक्त निर्णय लेगा।

16. अधिनियम, संविधि और अध्यादेशों के उपबंधों के अध्याधीन, परीक्षाओं में अनुचित आचरण, अन्य कदाचारों, परीक्षा फार्मों के जमा करने की तारीखों, डिग्रियों/डिप्लोमा की प्रतिलिपि जारी करने, परीक्षकों, पर्यवेक्षकों, निरीक्षकों हेतु अनुदेशों, उनके पारिश्रमिक जैसे प्रशासनिक मुद्दों तथा परीक्षाओं के संचालन से जुड़े किसी अन्य मामले पर शैक्षणिक परिषद द्वारा इन प्रयोजनों के लिए अनुमोदित दिशानिर्देशों के अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

17. इस अध्यादेश में कही गई किसी बात के बावजूद, किसी भी अप्रत्याशित और इस अध्यादेश के अंतर्गत नहीं शामिल मुद्दे के उत्पन्न होने के कारण, अथवा व्याख्या में अंतर होने की दशा में, कुलपति किसी या सभी विभागाध्यक्ष वाली एक समिति की राय/सलाह, यदि आवश्यक हो, प्राप्त करने के बाद निर्णय ले सकता है। कुलपति का निर्णय अंतिम होगा।

एस. एन. झा, रजिस्ट्रार

No.F.16(16)/Plg./IGDTUW/2013/1071.—In pursuance of the provisions of Section 31 of the Indira Gandhi Delhi Technical University for Women Act, 2012 (Delhi Act No. 9 of 2012), the Board of Management of the University hereby makes the following Ordinance relating to conduct and evaluation of examinations for programmes leading to all Bachelor/Master Degrees and Post-graduate Diplomas at Indira Gandhi Delhi Technical University for Women, namely :—

1. Short Title and Commencement.—

1.1 This ordinance may be called the Third Ordinance of the Indira Gandhi Delhi Technical University for Women, 2015.

1.2 It shall be deemed to have come into force with effect from 20th December, 2013 (the date of its approval by the Board of Management).

2. GENERAL.—This ordinance shall apply to all programmes leading to all Bachelor's/Master's degrees and Post-graduate Diplomas following semester system. However, a programme may have additional requirements, which will be specified in regulations for that programme.

3. DEFINITIONS.—

3.1 **Academic Programme/Programme** shall mean a programme of courses and/or any other component leading to a Degree/Diploma;

3.2 **An Academic year** is a period of nearly twelve months devoted to completion of requirements specified in the Scheme of Teaching and the related examinations;

3.3 **Board of Studies (BOS)** shall mean the Board of Studies of the Department concerned;

3.4 **Course** means a component of the academic programme, carrying a distinctive code no. and specific credits assigned to it;

3.5 **End-Term Examination** shall mean the examination conducted at the end of the semester;

3.6 **External Examiner** shall mean an examiner who is not in the employment of the University;

3.7 **Mid-Term Examination** shall mean the examination conducted during the semester;

3.8 **Paper Setter** shall mean a person who has been assigned the work of paper setting, may be the teacher of the University or outside teacher who is not under employment of the University;

3.9 **Semester System** shall mean a programme wherein each academic year is apportioned into two semesters;

3.10 **Student** shall mean a person admitted to the Department of the University for any academic programme to which this Ordinance is applicable;

3.11 **Unfair Means Scrutiny Committee** shall mean a Committee for examining the cases of unfair means and for recommending punishment, if any, in such cases;

3.12 **University** shall mean Indira Gandhi Delhi Technical University for Women.

4. The University shall hold examinations for all such academic programmes as are approved by the Academic Council and as it may notify from time to time for awarding Bachelor's/ Master's degrees, Post-graduate diplomas, as the case may be, as per the prescribed Schemes of Teaching and to regular students i.e. candidates who have undergone a course of study in the University Examinations and Syllabi as are approved by the Academic Council.

5. Examinations of the University shall be open for a period specified for that programme of study in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi :

Provided that the Academic Council may allow any other category of candidates to take the university examination for any specified academic programme subject to the fulfilment of such conditions as may be laid down by the Academic Council from time to time :

Provided further, that a student, may be debarred from appearing in the end-term examination as provided in clause 8 of this Ordinance or as provided in any other Ordinance of the University.

6. Programmes Content and Duration.—

- 6.1 A Bachelor's/Master's degree and post-graduate diploma programme shall comprise of a number of courses and/or other components as specified in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi of the concerned programme, as are approved by the Academic Council. Each course shall be assigned a weightage in terms of specified credits.
- 6.2 The minimum period required for completion of a programme shall be the programme duration as specified in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi for the concerned programme.
- 6.3 The maximum permissible period for completing a programme for which the prescribed programme duration is n semesters, shall be $(n + 4)$ semesters. All the programme requirements shall have to be completed in $(n + 4)$ semesters.
- 6.4 For continuing in the under-graduate programme the student has to show satisfactory academic performance as defined in the clause 11.6. If the academic performance falls short, a student may be asked to repeat a year or her programme may be terminated.
- 6.5 Audit Course:—
- (i) A student may be allowed to "audit" a course(s) not included in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi, or one of the course(s) in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi, which the student is not opting for as a credit course, or as prescribed in clause 13.1.
 - (ii) The University may ask a student to audit one or more courses, so as to make up any pre-requisite deficiency.
 - (iii) Such audited course(s) shall be shown in the final mark-sheets under a distinct head of "Audited Course(s)" provided the attendance requirement of the course is duly certified to have been met by the concerned teacher(s). However, a student shall neither be entitled to any credits for such course(s), nor these shall be considered for the purposes of declaration of results.

7. Semester.—

- 7.1 An academic year shall be apportioned into two semesters. Each semester shall consist of twenty two weeks duration including the examination period. There shall be a break of two weeks after the first semester and a vacation of six weeks after the second semester.
- 7.2 The Academic Calendar shall be notified by the University each year, before the start of Academic Year.
- 7.3 The academic break-up of the semesters devoted to instructional work shall be as below:
- | | | |
|---|---|----------------|
| Imparting of instructions and/or laboratory work
(including class tests) | - | Eighteen Weeks |
| Preparatory Leave | - | One Week |
| Semester-end Examination, including Practical/
Laboratory Examination | - | Three Weeks |

8. Attendance.—

- 8.1 A student has to put in a minimum of seventy-five percent attendance in aggregate of all the courses taken together in a semester:
- Provided that the Dean of Faculty/Dean (Academic Affairs)/Head of the Department may condone attendance shortage upto 10% for individual student for reasons to be recorded in writing :
- Provided further that, under exceptional circumstances, the Vice-Chancellor may further relax the minimum attendance up to five percent;
- Provided also that under no circumstances a student who has an aggregate attendance of less than sixty percent in a semester shall be allowed to appear in the end-term examinations.
- 8.2 The relaxation provided in clause 8.1 may be considered by the Dean of Faculty/Dean(Academic Affairs)/Head of Department on production of documents showing that the student was:
- (i) busy in authorized activities;
 - (ii) suffering from any disease/disorder.
- Note:—** (a) A student should submit the documents to the above effect within seven days of resuming the studies. Documents submitted, thereafter, shall not be considered.

(b) No relaxation in attendance beyond clause 8.1 shall be allowed in any case.

- 8.3 Student who has been detained due to shortage of attendance shall not be allowed to be promoted to the next semester and she will be required to take re-admission and repeat all courses of the said semester with the next batch of students.
- 8.4 The University Enrolment number of such student shall, however, remain unchanged and she shall be required to complete the programme in a maximum permissible period of $(n+4)$ semesters as mentioned in clause 6.3.
- 8.5 Head of the Department shall announce the names of all such students who are not eligible to appear in the end-term examination, at least five calendar days before the start of the end-term examination and simultaneously intimate the same to the Controller of Examinations.
- 8.6 In case any student appears by default, who in fact has been detained by the Department, her result shall be treated as null and void.

9. Evaluation—

- 9.1 The overall weightage of a course in the Syllabi and Scheme of Teaching and Examination shall be determined in terms of credits assigned to the course.
- 9.2 The evaluation of students in a course shall have two components unless specifically stated otherwise in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi:
- evaluation through end-term examination;
 - continuous evaluation by the teacher(s) of the course.
- 9.3 The distribution of weightage for various components of evaluation shall be as below:

Theory Courses	Weightage for End-Term Examination	Weightage for Continuous Evaluation by the Teacher
Theory Courses	60%	40%
Practical/Laboratory Courses	60%	40%
Dissertation/Thesis External Examiner Internal Examiner	60%	40%

- 9.4 For any other component of a programme not covered by the above, the weightage shall be prescribed by the Board of Studies with the approval of the Vice-Chancellor.
- 9.5 Teacher's Continuous Evaluation :
- course components and apportioned marks

COURSE COMPONENTS	APPORTIONED MARKS
Theory Courses: The teacher's continuous evaluation shall be based on the following:	
• Two Class Tests*	15 Marks for each Test
• Assignment/Group Discussion/ Viva-Voce/ Additional Test/Quizzes/Attendance etc	10 Marks
* The two class tests shall ordinarily be held after six weeks and twelve weeks of teaching in accordance with the University Academic Calendar	
Practical/Laboratory Courses	
The teacher's continuous evaluation shall be based on performance in the laboratory, attendance, practical exercises/assignments, quizzes, etc.	15, 15 and 10 Marks

- for dissertation/thesis, wherever specified in the syllabus, the evaluation shall be done and marks awarded by a Committee comprising of an internal examiner, who will ordinarily be the supervisor, and one or more external examiners. The internal examiner shall award marks out of 40%, and the

- external examiner(s) out of 60%. The examiners shall be appointed by the Vice-Chancellor, out of a panel of three or more names suggested as specified in clause 10 of the Ordinance;
- (iii) the University shall have the right to call for all the records of teacher's continuous evaluation and moderate the teacher's evaluation, if it deems fit in any specific case(s);
 - (iv) end-term practical examinations shall be conducted by a Board of Examiners for each course. The Board shall consist of one or more examiners;
 - (v) for any other type of examination, not covered by clause 9.5(i) and 9.5(ii), the mode of conduct of examination shall be as specifically provided in the syllabus/scheme of examination and in the absence of such a provision shall be decided by the Controller of Examinations on the recommendation of the Board of Studies with the approval of the Vice-Chancellor;
 - (vi) the results of a semester (including both the end-term examinations and teacher's continuous evaluation) shall be declared by the Controller of Examinations. However, after scrutiny of the detailed result, if it is observed by Controller of Examinations that there has been a distinct change of standard in the examination as a whole or in particular course, he/she may refer the matter to the Moderation Committee, specially constituted for the purpose by the Vice Chancellor;
 - (vii) the award list containing the marks obtained by a student in various courses shall be issued by the Controller of Examinations, at the end of each semester, after the declaration of the result.
- 10. Conduct of semester end-term examinations.—**
- 10.1 All end- term examinations shall be conducted by the Controller of Examinations.
- 10.2 The Schedule of examination shall be notified by the Controller of Examinations at least ten days prior to the first day of the commencement of end-term examinations.
- 10.3 For theory as well as practical examinations and dissertation/thesis/project report/training report all examiners shall be appointed by the Controller of Examinations with the approval of the Vice-Chancellor :
- Provided that the Vice-Chancellor may, at his/her discretion, delegate the authority for approval of examiners.
- 10.4 Recommendations for names of examiners shall be obtained from the concerned Boards of Studies through their respective Chairman. Where there is an exigency and the Board of Studies cannot meet, the Chairman, Board of Studies may recommend the names, stating clearly why the meeting of Board of Studies could not be convened. In emergent situations, where, for some reason the recommendations cannot be obtained from the Board of Studies as stipulated above, recommendations may be obtained from one of the Deans nominated by the Vice-Chancellor.
- 10.5 The Controller of Examinations shall be authorized to add one or more names in the panel of examiners received by him from Boards of Studies /Head of the Department before the list is submitted to the Vice-Chancellor for approval.
- 10.6 After the receipt of the question paper(s) from the paper setter, the same shall be moderated by the moderator(s) to be appointed subject-wise by the Controller of Examinations with the approval of Vice Chancellor. Controller of Examinations shall ensure that minimum of two question papers duly moderated in each subject are available in the question paper bank.
- 10.7 The Examiner appointed by the Controller of Examinations, out of the approved panel for setting the question paper shall set the question paper, using the last year question papers wherever applicable, as a guide. The question paper shall be set out of the entire syllabus of a course.
- 11. Criteria for Passing Courses, Marks and Division.—**
- 11.1 Obtaining a minimum of 50% marks in aggregate in each course including the end-term examination and the teacher's continuous evaluation shall be essential for passing the course and earning its assigned credits. A candidate, who secures less than 50% of marks in a course, shall be deemed to have failed in that course.
- 11.2 A student may apply, within two weeks from the date of the declaration of the result, for re-checking of the examination script(s) of a specific course(s) on the payment of prescribed fees. Rechecking shall mean verifying whether all the questions and their parts have been duly marked as per the question paper, and the totaling of marks. In the event of a discrepancy being found, the same shall be rectified through appropriate changes in both the result as well as marks-sheet of the concerned end-term examination.
- 11.3 A student obtaining less than 50% of maximum marks (including end-term examination and Teacher's Continuous Evaluation) assigned to a course and failing in the course shall be allowed to re-appear in a end-term examination of the course in a subsequent semester(s) when the course is offered, subject to maximum permissible period of $(n+4)$ semesters as mentioned in clause 6.3. The re-appearing students who secured less than 50% marks in the teacher's continuous evaluation have the option to repeat and improve the two class tests performance with the next batch of students, in such cases the student will request for such improvement in the beginning of the said semester to the Head of Department and the improved internal marks, if received from the Department concerned at least seven days before the commencement of end-term examination shall

be considered, otherwise the previous internal marks already obtained by the student shall be taken into account without any modification. In such cases where the students opt to improve the two class tests performance with the next batch of students, the marks obtained in two class tests will be proportionately increased to include the component of assignment / group discussion / viva voce/additional test/quizzes etc.

No extra fee shall be charged from the students in this regard.

11.4 A student who has to reappear in an end-term examination in terms of clause 11.3 above shall be examined as per the syllabus which will be in operation during the subsequent semester(s). In case, the course content or syllabus of the subject is revised, a failed student in particular subject/subjects have to appear in the examination of the said course/courses as per the revised course contents. In case a particular subject is discontinued, the department can specify another equivalent subject in lieu of the discontinued subject, in such a case the failed candidate will be required to appear in both the mid-term and end-term examination.

11.5 Students who are eligible to reappear in an examination shall have to apply to the Controller of Examinations through the Department to be allowed to reappear in an examination and pay the fees prescribed by the University.

11.6 Criteria for Promotion to the Next Year:-

- (i) a student will be promoted to the next academic year only if such student has obtained at least,
 - (a) 50%, (accurate upto two decimal digits) of the total credits of the ensuing academic year from which the promotion to next academic year is being sought, and
 - (b) 90%, (accurate upto two decimal digits and rounding of thereafter to full digits) of the total credits of the previous year excluding the credits of the ensuing academic year from which the promotion to next academic year is being sought.
- (ii) all such students who fail to get promoted to next academic year for the reason of deficiency in required credits as stated here in above will automatically be declared to have taken academic break to reappear in such examinations of previous semesters in which the student has failed, so as to obtain sufficient credits to be promoted to the next academic year. Academic Break shall be applicable only to students,-
 - (a) who do not attend any classes in a particular year of the program as per norms of the University;
 - (b) who are detained due to shortage of attendance;
 - (c) who are not able to secure/obtain 50% credits in a particular year/semester(s).
- (iii) only two academic breaks are permissible for a student for the completion of the academic programme/course. In no situation a student will be allowed to take more than two academic breaks, for any reason whatsoever, including for the reasons of detention for shortage of attendance or deficiency of credits during the whole term of completion of the course/programme. A student who has exhausted two academic breaks and a further occasion arises for her to take academic break because of non promotion or detention, in such cases the admission of such student would automatically stand cancelled right at the time such an occasion of more than two academic breaks arise.

11.7 A candidate who has earned the minimum number of credits prescribed in the concerned Scheme of Teaching and Examination and Syllabi, shall be declared to have passed the programme, and shall be eligible for the award of the relevant degree or diploma. The credits included in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi of a programme shall generally be 5-10% more than such minimum specified credits subject to prescribed guidelines of the concerned statutory or regulatory authority, if any.

11.8 **Award of Division.**— The successful candidates will be placed in Divisions as below:

- (i) **Second Division:** A candidate obtaining a Cumulative Performance Index (CPI) at the end of the programme of 50 and above but below 60 shall be placed in Second Division;
- (ii) **First Division:** A candidate obtaining a Cumulative Performance Index at the end of the programme of 60 and above but below 75 shall be placed in the First Division;
- (iii) **First Division with Distinction:** A candidate obtaining a Cumulative Performance Index of 75 and above at the end of the programme shall be placed in First Division with Distinction, provided, the candidate has passed all the courses for which she has earned credits. Further, a candidate obtaining a Cumulative Performance Index of 90 and above shall be deemed to have passed the programme with exemplary performance provided she has passed all the courses for which she has earned the credits, in the first attempt. Such candidates will be awarded a special University Certificate to this effect;
- (iv) For the above, Cumulative Performance Index (CPI) shall be calculated as in clause 13.1 and shall be based only on marks obtained in courses for which credits have been earned.

12. Award of Degree/Diploma.—**12.1** A student shall be awarded a degree/diploma if:

a student becomes eligible for the award of the Degree/Diploma after fulfilling all the academic and non-academic requirements prescribed by the Academic Council and as specified in the Ordinance:

Provided (a) student has successfully earned the minimum credits as specified in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi of the concerned programme (b) there are no dues outstanding in student's name to a Department/University and (c) no disciplinary action is pending against the student.

12.2 Criteria for passing courses and award of credits.— Obtaining a minimum of 50% marks in aggregate in each course including the semester-end examination and the teacher's evaluation shall be essential for passing the course and earning its assigned credits. A candidate, who secures less than 50% marks in a course, shall be deemed to have failed in that course and no credits will be awarded for that course to the student.**12.3** Under exceptional circumstances, where gross violation of the graduation requirements or use of dishonest means is detected at a later stage, the Academic Council may recommend to the Board of Management to withdraw an already awarded degree.**13. Calculation of Cumulative Performance Index (C.P.I.)—****13.1** A student having earned minimum credit as required for the degree/diploma will be eligible for the award of degree/diploma provided she has not skipped or disqualified in more than four credits in Core Subjects. The overall performance of a candidate will be determined at any stage as follows:

$$\text{Cumulative Performance Index} = \frac{\sum^N C_n M_n}{\sum^N C_n}$$

Where C_n is the number of credits earned for the course n in any semester and M_n is the marks obtained by the student for the Course n . N is the total number of Courses over which the performance is being measured. All courses shall have maximum marks of 100 irrespective of the number of credits assigned to the courses. In calculating Cumulative Performance Index, only those courses, which the student has passed obtaining not less than 50% marks and for which credits are earned, will be taken into account, the other courses in which the student has appeared but secured less than 50% marks shall be treated as "Audit Courses" and the same shall be reflected in the final mark sheet accordingly.

13.2 Cumulative Performance Index of the candidate shall be calculated on the basis of the minimum credits required for each programme considering her performance in the subjects, wherein she has secured highest marks. However, in the marksheet, the maximum credits earned by the candidate shall also be reflected.**13.3** For the purpose of equivalence Cumulative Performance Index of the student shall be considered equivalent to the percentage of Marks.**14. Use of Unfair Means.—** All cases regarding reported use of unfair means in the examination shall be placed before a Standing Unfair Means Scrutiny Committee/s for decision in individual cases, and recommending penalties, if any. The actions deemed as "Use of Unfair Means" and procedure for dealing with cases of suspected/alleged/ reported use of unfair means shall be specified in a separate regulations approved by the Academic Council.**15. Students Grievance Committee.—**In case of any written representation / complaints received from the students within seven days after completion of the examination regarding setting up of question paper etc. along with specific recommendations of the Head of Department, the same shall be considered by the Students Grievance Committee to be constituted by the Vice Chancellor. The Vice Chancellor shall take appropriate decision on the recommendations of the Students Grievance Committee, before the declaration of result(s) of the said examination.**16.** Subject to the provisions of the Act, the Statutes and the Ordinances such administrative issues as disorderly conduct in examinations, other malpractices, dates for submission of examination forms, issue of duplicate degrees/diplomas, instructions to examiners, superintendents, invigilators, their remuneration and any other matter connected with the conduct of examinations will be dealt with as per the guidelines approved for the purposes by the Academic Council.**17.** Notwithstanding anything stated in this Ordinance, for any unforeseen issues arising, and not covered by this Ordinance, or in the event of differences of interpretation, the Vice-Chancellor may take a decision, after obtaining if necessary the opinion/advice of a Committee consisting of any or all the Head of Department. The decision of the Vice-Chancellor shall be final.

S.N. JHA, Registrar